श्रीराम सांस्कृतिक शोध संस्थान के लिया 26 नवम्बर 2023 के लिए लिखा भाषण

श्रीराम कथा सितारों से सुनिए – लेख
(राम जी के जीवन की घटनाओं की सटीक तिथियाँ ग्रहों-नक्षत्रों की स्थितियों को प्लैनेटेरियम सॉफ्टवेर के माध्यम से सुनिश्चित किया गया हैं)

'रामायण' आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा श्रीराम के जीवनकाल के दौरान रचित मूल महाकाव्य है। वाल्मीकि जी ने हजारों वर्ष पहले इस महाकाव्य की रचना की थी। उन्होंने 'रामायण' में तेजस्वी तथा मनस्वी श्रीराम के जीवन चरित्र का वास्तविक एवं रोचक वर्णन किया है। यह एक ऐसी अद्वितीय रचना सिद्ध हुई कि पिछले हजारों वर्षों से विश्व भर के करोडों लोगों ने रामायण की कहानी का लेखन और पठन, चित्रण और गायन, अनुवाद और मंचन इतनी बार किया कि यह एक जीवन्त परंपरा तथा जीवन्त विश्वास बन गई।

सबसे पहले 20वीं सदी के महानतम वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने कहा था, "रामायण का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वाल्मीकि जी ने महाकाव्य रामायण की रचना करते समय उसमें बहुत से प्रमाण सम्मिलित किए। एक तरफ उन्होंने उस समय पर आकाश में ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति एवं बहुत से स्थलों का भौगोलिक चित्रण एवं ऋतुओं का वर्णन किया है, तो दूसरी ओर राजाओं की वंशावलियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी है जिसका वैज्ञानिक विधि से प्रयोग करके उन घटनाओं का समय ज्ञात करना कोई टेढ़ी खीर नही है। आधुनिक तारामंडल सॉफ्टवेयर का उपयोग करके खगोलीय गणनाओं ने यह सिद्ध किया है कि वाल्मीकि रामायण में वर्णित घटनाएं वास्तव में 7000 वर्ष पूर्व उसी क्रम में घटित हुई थीं जैसाकि रामायण में वर्णित हैं। रामसेतु उसी स्थान पर जलमग्न पाया गया है जिस स्थान का वर्णन रामायण में किया गया हैं"।

श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का जन्म तथा उस समय के आकाशीय दृश्य

प्लैनेटेरियम तथा स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर का उपयोग कर रामायण के खगोलीय संदर्भों के व्योमचित्र लिये गए। श्रीराम का जन्म आज से लगभग 7100 वर्ष पहले अयोध्या में ही हुआ, इस तथ्य के अनेकों वैज्ञानिक प्रमाण हैं। पुत्रकामें ष्टि यज्ञ समाप्ति के पश्चात् छह ऋतुएं बीत जाने के बाद, 12वें मास में चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में कौशल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त एक यशस्वी और प्रतिभाशाली पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम 'राम' रखा गया। बालकाण्ड में महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम के जन्म के समय देखी गई ग्रहों, राशियों और नक्षत्रों की स्थितियों का विस्तृत वर्णन दिया है। उस समय चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र में था और-

1- सूर्य अपने उच्च स्थान में ष में

2- शुक्र अपने उच्च स्थान मीन में

3- मंगल अपने उच्च स्थान मकर में

4- शनि अपने उच्च स्थान तुला में

5- बृहस्पति अपने उच्च स्थान कर्क में

6- चैत्र माह, शुक्ल पक्ष

7- अमावस्या के पश्चात् नवमी तिथि

8- चन्द्रमा और बृहस्पति एक साथ कर्क में चमक रहे थे

9- कर्क राशि पूर्व से उदय हो रही थी।

इन सभी खगोलीय विन्यासों को प्लेनेटेरियम के अनुसार अयोध्या के अक्षांश और रेखांश से 10 जनवरी 5114 वर्ष ई. पू. को दोपहर 12 बजे से 2 बजे के बीच के समय में देखा जा सकता था। स्टेलरियम यही आकाशीय दृशय 19 फरवरी 5114 ईसा पूर्व (40-41 दिन बाद) को दर्शाती है। यह चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि थी और उस दिन समस्त भारत में आजतक रामनवमी मनाई जाती है।

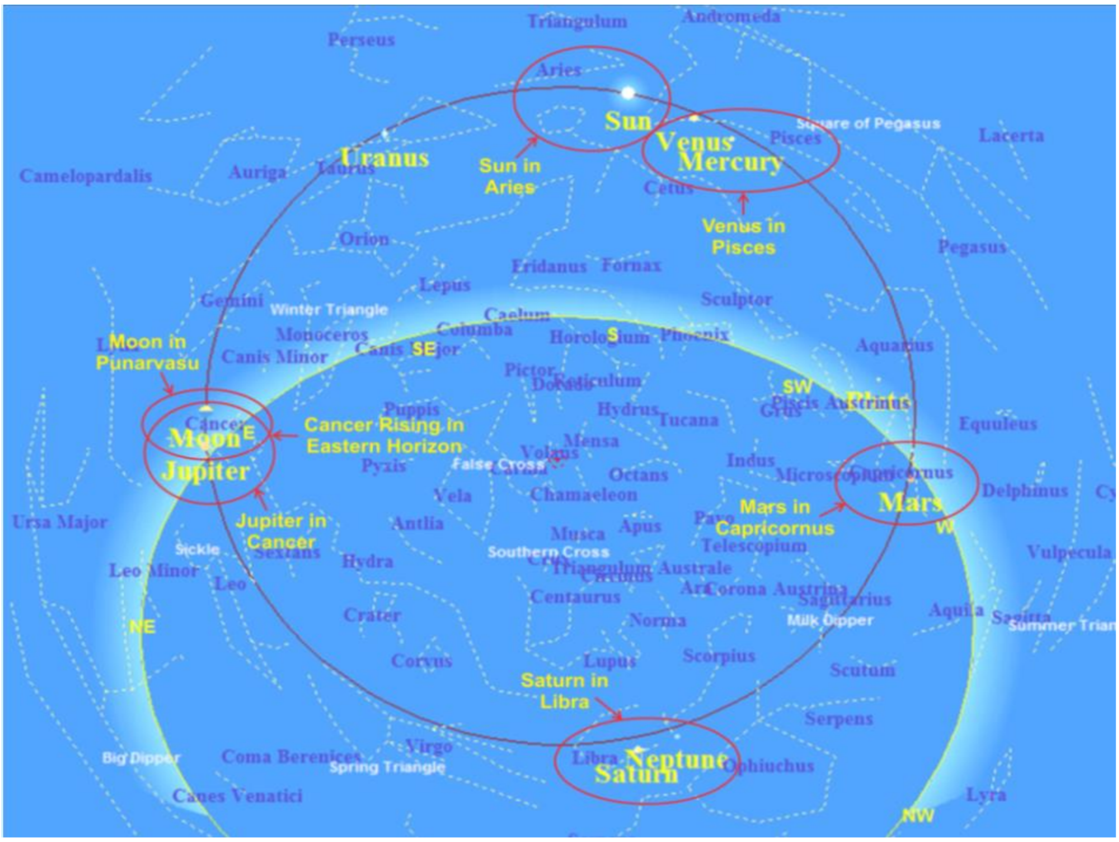

व्योमचित्रः अयोध्या / भारत 27° उत्तर, 82° पूर्व; 10 जनवरी, 5114 ई. पू., 12:30 बजे, चैत्र शुक्ल नवमी

श्रीराम के जन्म के पश्चात् कैकेयी ने सत्य पराक्रमी भरत को पुष्य नक्षत्र और मीन लग्न में चैत्र शुक्ल दशमी को लगभग 4:30 बजे जन्म दिया। इसके पश्चात् सुमित्रा के दो पुत्रो लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म अश्लेषा नक्षत्र और कर्क लग्न में 11:30 बजे हुआ।

राजा दशरथ के चारों पुत्र शक्तिशाली, सदाचारी, गुणवान तथा मधुर व्यक्तित्व वाले थे। फिर एक दिन ऋषि विश्वामित्र जी पधारे और दस दिन के लिए श्रीराम व लक्ष्मण को अपने साथ ले गए। उस समय श्री राम की आयु केवल सोलह वर्ष थी। चौथे दिन श्रीराम ने ताडका का वध कर दिया। ताडका वध से प्रसन्न होकर ऋषि विश्वामित्र ने श्रीराम को दिव्य अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। दसवें दिन यज्ञ सम्पन्न हुआ और अगले ही दिन श्रीराम, लक्ष्मण व अन्य ऋषियो को लेकर ऋषि विश्वामित्र मिथिला की ओर उत्तर - पूर्व दिशा में चलने लगे।

मिथिला पहुँचने पर राजा जनक और पुरोहित शतानन्द ने ऋषि विश्वामित्र को उच्च आसन ग्रहण करवाया। दोनों राजकुमारों को मिथिला लाने के लिए राजा जनक ने ऋषि विश्वामित्र का आभार व्यक्त किया। श्री राम ने शिव धनुष पर वान-संधान कर खींचा और वो धनुष टूट गया । इस प्रकार राजा जनक की पुत्री सीता के साथ उनका विवाह निश्चित हो गया। राजा जनक ने अपनी पहली पुत्री सीता का विवाह श्रीराम से कर दिया तथा दूसरी पुत्री उर्मिला का विवाह लक्ष्मण से कर दिया। फिर अपने भाई की पुत्री मांडवी का हाथ भरत, और श्रुतकीर्ति का हाथ शत्रुघ्न को सौंप दिया। चारों राजकुमारों ने अपनी अपनी पत्नियों के साथ लगभग 9 वर्षों तक सुखी जीवन व्यतीत किया। राजा दशरथ अपने चारों पुत्रों से स्नेह करते थे लेकिन अपने पुत्र श्रीराम के अनुपम गुणों को देखकर राजा दशरथ ने राम के राज्याभिषेक की सोची। श्रीराम के राज्याभिषेक का समाचार अयोध्या नगरी में फूलों की सुगंध की तरह फैल गया। अयोध्या के वासी धर्मपरायण राम के राज्याभिषेक से प्रसन्न थे।

उधर कैकेयी के पास जाकर दासी मंथरा ने उसके मन में जहर भर दिया। कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वर मांगे। पहले वर के अनुसार राम की जगह भरत का राज्याभिषेक किया जाए और दूसरे वर की आपूर्ति हेतु राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया जाए। रानी के ऐसे वचन सुनकर राजा दशरथ संताप करते रहे और कुछ क्षण के लिए मूर्छित हो गए। श्रीराम माता कैकेयी तथा पिता दशरथ की आज्ञा का पालन करने के लिए चौदह वर्षों के वनवास हेतु प्रस्थान करने की शीघ्रता में थे। तत्पश्चात् सीता जी और लक्ष्मण सहित श्रीराम ने अपने पिता और सौतेली माता कैकेयी से वन प्रस्थान की आज्ञा मांगी। प्लैनेटेरियम सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए **वनों के लिए प्रस्थान की तिथि** 5 जनवरी, 5089 वर्ष ई. पू. को दिखाई देती है। उस समय सूर्य और मंगल ग्रह रेवती नक्षत्र के समीप मीन राशि में थे जो राजा दशरथ की राशि थी। चन्द्रमा कर्क राशि में पुष्य नक्षत्र के पास था। सॉफ्टवेयर के व्योमचित्र के अनुसार यह चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि अर्थात् श्रीराम के 25वें जन्मदिवस की तिथि थी ।

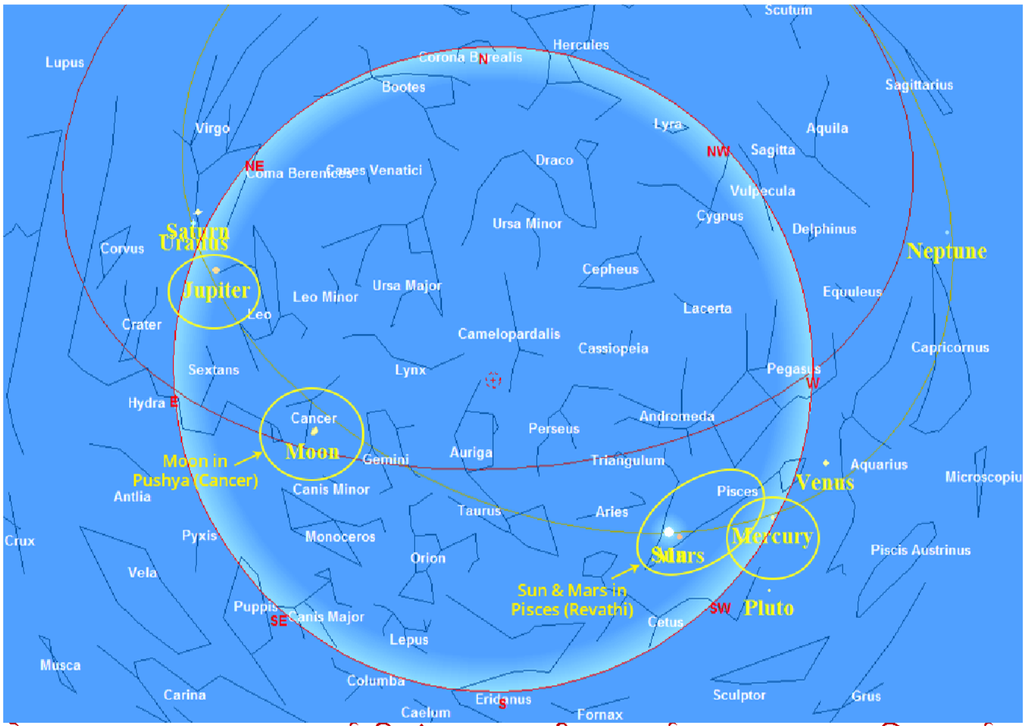

अयोध्या/भारत, 27° उत्तर, 82° पूर्व, दिनांक 05 जनवरी, 5089 ई.पू. 15 बजकर 20 मिनट, सूर्य तथा मंगल रेवती अर्थात् मीन में, चंद्रमा कर्क राशि में पुष्य नक्षत्र के पास, बृहस्पति, मंगल और बुद्ध आकाश में दृश्यमान; प्लेनेटेरियम द्वारा मुद्रित

राजा की आज्ञा से सुमंत्र उत्तम एवं द्रुत घोडों से सुशोभित रथ व अन्य सामान ले आए। अयोध्या के प्रजाजन, विद्वान तथा बुजुर्ग आदि श्रीराम की वनयात्रा में उनके पीछे-पीछे चलते रहे और श्रीराम के निरंतर अनुरोध पर भी अयोध्या वापिस जाने से इंकार कर दिया। श्रृंग्वेरपुर में कोल जनजाति के राजा गुह निषाद ने श्रीराम का भव्य स्वागत किया। फिर वो ऋषि भारद्वाज के आश्रम से होते हुए चित्रकूट पंहुच गए । राजा दशरथ का निधन हो गया और भरत श्री राम को अयोध्या वापिस लेजाने में असफल रहे। कुछ समय पश्चात् श्रीराम चित्रकुट से चले गये। तत्पश्चात तीनों राजसी तपस्वी दस वर्ष तक दंडक वन में रहने के पश्चात नासिक के निकट स्थित पंचवटी में कुटिया बना कर रहने लगे

खर और दूषण वध से पहले पंचवटी से सूर्य ग्रहण का अवलोकन

श्रीरामचन्द्र जी लक्ष्मण के साथ वार्तालाप कर कर रहे थे तभी अचानक वहाँ एक राक्षसी 'शुर्पनखा' आ पहुँची। उसने श्रीराम की सुन्दरता पर मोहित होकर उनसे विवाह का प्रस्ताव रखा। श्रीराम द्वारा ठुकराए जाने पर वह सीता का भक्षण करने सीता की तरफ दौडी तो लक्ष्मण ने शुर्पनखा के नाक, कान काट दिया। शुर्पनखा रोते हुए वापस लौटी और शीघ्र ही खर और दूषण ने 14,000 सैनिकों को लेकर पंचवटी की ओर प्रस्थान किया। जिस समय सेना आगे बढ रही थी उस समय सूर्यग्रहण दिखाई दिया (वा. रा. 3/23/3), जब खर अपने रथ पर सवार होकर आकाश में ग्रहो के मध्य उदित हुए मंगल ग्रह की तरह प्रतीत हो रहा था।

प्लैनेटेरियम सॉफ्टवेयर से देखने पर पाया कि दिनांक 7 अक्टूबर, 5077 वर्ष ई.पू. पौष मॉस की अमावस्या को दोपहर के समय सूर्य ग्रहण दिखाई दिया था, जिसे नासिक से देखा जा सकता था। **मंगल ग्रह मध्य** में था, एक तरफ बुध, शुक्र और बृहस्पति थे और दूसरी तरफ सूर्य चन्द्रमा और शनि ग्रह साफ देखे जा सकते थे।

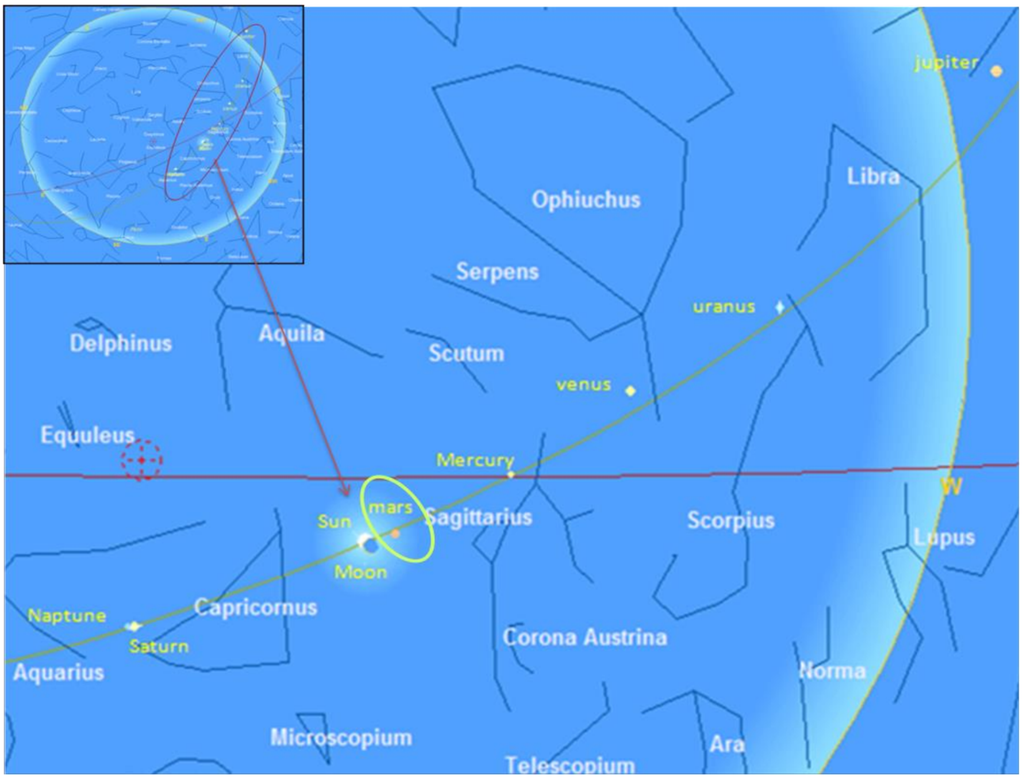

पंचवटी, नासिक (20°उत्तर, 73° पूर्व), 5077 ई. पू. की पौष अमावस्या, 14:15 बजे देखें सूर्यग्रहण
मंगल मध्य में; शनि, सूर्य और चंद्रमा एक तरफ व बुद्ध, शुक्र और बृहस्पति दूसरी तरफ; प्लेनेटेरियम द्वारा मुद्रित

श्रीराम ने खर और दूषण दोनो को उनके चौदह हज़ार राक्षसों सहित मौत के घाट उतार दिया । रावण अपने मंत्रियो के साथ सभा में बैठा था तभी अंगभंग अवस्था में रोटी-चिल्लाती शुर्पनखा आई और सारा वृतांत सुनाया। गुस्से से लाल हुए रावण ने मारीच को सुन्दर मृग का रूप धारण करने के लिए मज़बूर किया। फिर सीता को अकेला देखकर छल बल का प्रयोग कर सीता का अपहरण कर लिया। शोक संतप्त राजकुमार सीता की खोज में निकले और मतंगवन में शबरी से भी प्रेम सहित मिले ।

तत्पश्चात श्रीराम और लक्ष्मण की ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान और सुग्रीव से भेंट हुई। श्री राम ने बाली का वध कर सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बना दिया और उसकी पत्नी से उसका पुनर्मिलन करवा दिया। तुंगभद्रा नदी के उत्तरी तट पर स्थित एनागोंडी गॉव प्राचीन किष्किंधा माना जाता था। यह आधुनिक किष्किंधा क्षेत्र में स्थित है तथा कर्नाटक के कोपल जिले में स्थित है।

बाली के वध से पहले किष्किंधा में 5076 ईसापूर्व में आषाढ़ मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण भी दिखाई दिया था, जैसा की राममयन में वर्णित है -

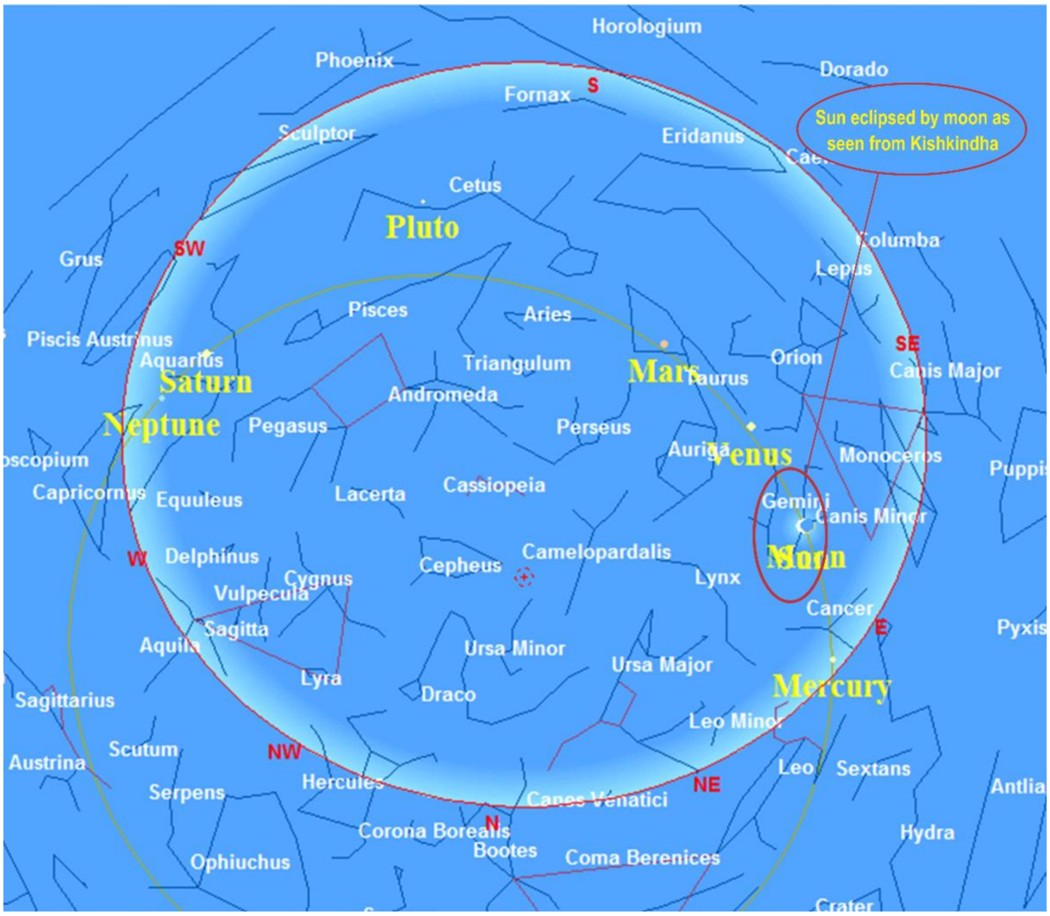

3 अप्रैल 5076, बाली के वध से ठीक पहले आषाढ़ की अमावस्या को किष्किंधा से सूर्यग्रहण 8 बजे, **प्लेनेटेरियम**

वानरराज सुग्रीव का राज्याभिषेक हो गया; तत्पश्चात श्रीराम चार मास के लिए प्रस्रवण पर्वत की गुफा में रहे। चार महीने के पश्चात् वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर 5076 ईसा पूर्व के कार्तिक-मार्गशीर्ष के महीने में सुग्रीव ने सीता की खोज में वानर सेना को सभी दिशाओ में भेजा। अंगद के नेतृत्व में एक बहुत शक्तिशाली सेना को भारतीय उप महाद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र में सीता जी को खोजने के लिए भेजा गया। इस शक्तिशाली दल में हनुमान, जांबवान, नील जैसे पराक्रमी भी शामिल थे।

लंका पंहुच कर हनुमान ने देखा कि रावण की लंका अत्यंत सुन्दर थी। हनुमान ने सीता की खोज में कई महलों तथा भवनों का निरीक्षण किया परन्तु सीता का कोई अता पता नही मिला। सीता की खोज करते समय वे अशोक वाटिका में चले गए। शिंशपा वृक्ष के ऊपर बैठकर हनुमान की

नजर सीता पर पडी, जो राक्षसियो से घिरी हुई अत्यंत शोक संतप्त दिखाई दे रही थी। संध्या का समय था रावण ने लगभग सौ सुन्दर स्त्रियो के साथ अशोक वाटिका में प्रवेश किया। रावण को अपने पास आता देखकर सीता का मुख पूर्णिमा की रात के ग्रहण से ग्रसित चन्द्रमा के समान दिखाई दे रहा था, जो उस समय लंका के आकाश में देखा गया था। वाल्मीकी द्वारा वर्णित पौष की पहली पूर्णिमा की रात्रि के इस चन्द्रग्रहण को प्लेनेटेरियम सॉफ्टवेयर ने कोलंबो के अक्षांश और रेखांश से दिनांक 12 सितंबर, 5076 को शाम 4:15 बजे से 6:55 बजे तक दिखाया है।

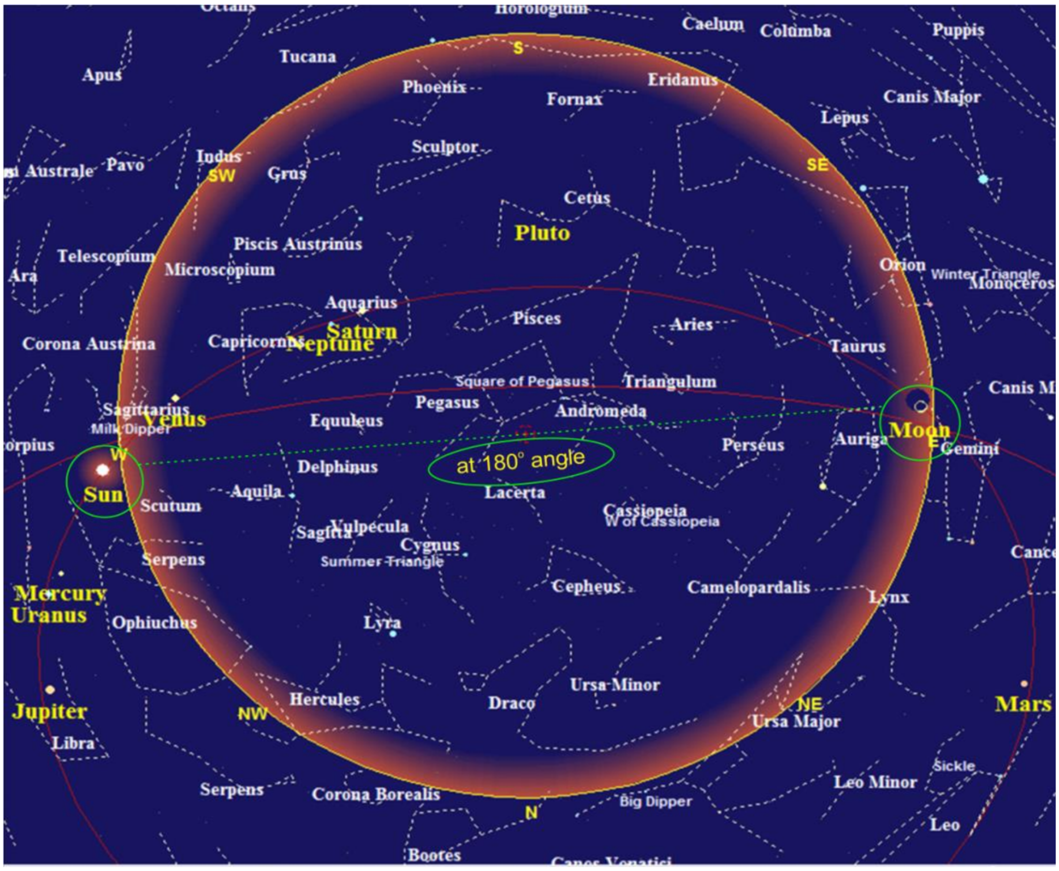

व्योम चित्र : कोलंबो, 7° उत्तर, 80°पूर्व, 12 सितंबर, 5076 ई. पू., 18:30 बजे, अशोक वाटिका में रावण के द्वारा सीता जी को धमकाते समय का चन्द्रग्रहण; प्लैनेटेरियम द्वारा मुद्रित

सीता ने रावण को जमकर फटकारा। रावण के क्रोध को देखकर मंदोदरी और धान्यमालिनी उसे अपने साथ ले गईं। इसके बाद हनुमान ने सीता को श्रीराम के द्वारा दी गई मुद्रिका भेंट की। सीता ने प्रसन्नचित होकर उस मुद्रिका को आंखो से लगा लिया। इसके बाद उन्होने एक वस्त्र की गांठ को खोलकर चूड़ामणि निकाली और हनुमान को देते हुए कहा कि वह इसे स्मृति चिन्ह के रूप में श्रीराम को देदें।

एकाएक हनुमान ने अपने शरीर का खिंचाव कर लिया **अशोक वाटिका का विनाश** कर दिया; रावण के पुत्र अक्षय कुमार का वध कर दिया। रावण ने हनुमान की पूंछ में आग लगवाई;

हनुमान ने सोने की लंका को जला डाला। हनुमान 14 सितंबर, 5076 ई. पू. को वापिस चल दिए। श्रीराम तथा सुग्रीव को प्रणाम करके हनुमान ने सीता की खोज के बारे में विस्तार से बताया। हनुमान ने विस्तार से सीता जी की दयनीय स्थिती के बारे में बताया और कहा कि सीताजी श्रीराम के प्रति अपनी वफादारी से तनिक भी विचलित नही हुई। इसके बाद हनुमान ने सीता जी द्वारा चिन्ह स्वरूप दी गई चूड़ामणि श्रीराम को सौंप दी। 19 सितंबर, 5076 वर्ष ई. पू. (स्टेलेरियम के अनुसार 30 अक्टूबर 5076 ई. पू.) को श्रीराम और सुग्रीव की विशाल सेना ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में लक्ष्मण ने कुछ ग्रहों-नक्षत्रों का वर्णन किया, जिन्हें हू-ब-हू 20 सितंबर को देखा जा सकता था -

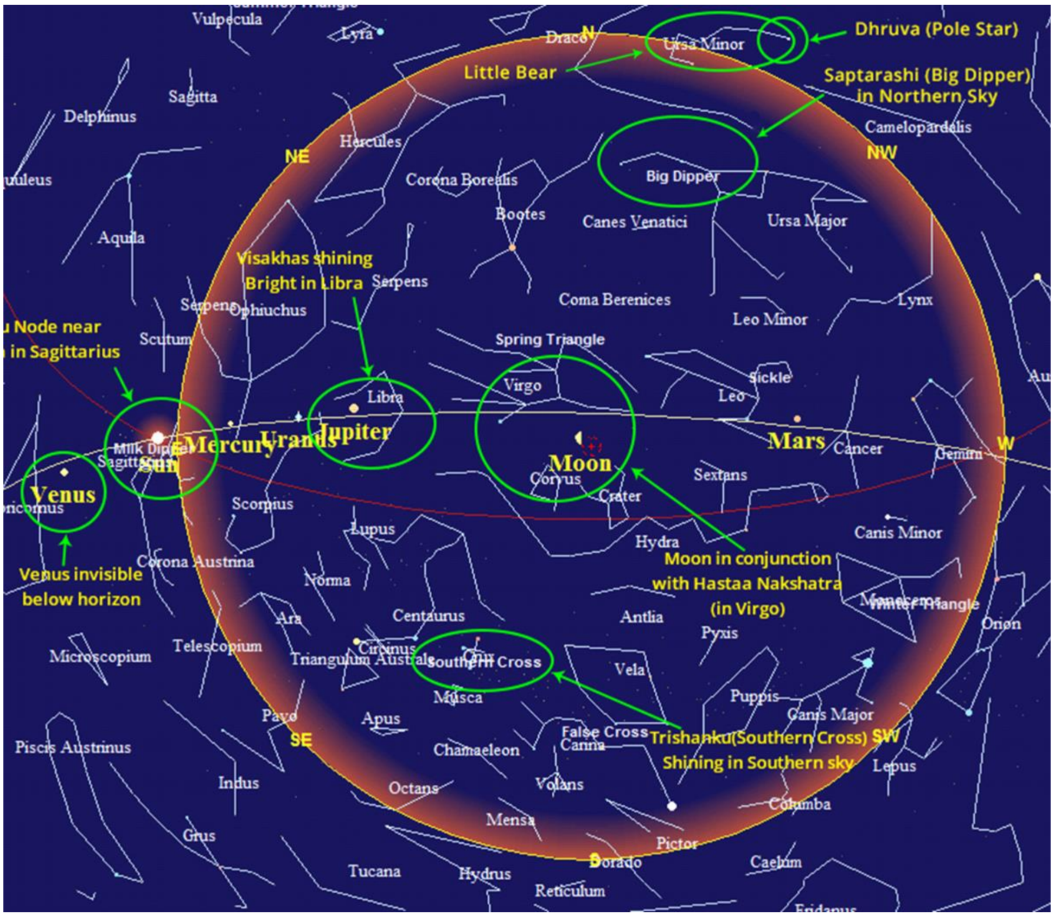

व्योम-चित्र: कर्नाटक/भारत 16° उत्तर, 76° पूर्व, सितंबर 20, 5076 ई.पू., 06:10 बजे; माऊण्ट प्रस्रवण से रामेश्वरम यात्रा के दौरान देखी गई खगोलीय स्थितियों (प्लेनेटेरियम का आकाशीय दृश्य)

इस व्योमचित्र में दर्शाई गईं सभी खगोलीय स्थितियों का वर्णन युद्ध कांड के सर्ग 4/5,48-51 में किया गया है - **इस आकाशीय दृश्य में 20 सितम्बर, 5076 वर्ष ई.पू. वाले दिन :-**

1. कन्या राशि (Virgo) में हस्ता नक्षत्र के संयोजन में चन्द्रमा साफ दिखाई दे रहे हैं।
2. उत्तरी आकाश में सप्तर्षि (ग्रेट बियर या Ursa Major) स्पष्ट चमक रहे हैं।
3. सप्तर्षि लिटल बीयर में ध्रुव तारे को दाहिने रखकर उनकी परिक्रमा कर रहे हैं।

4. त्रिशंकु (Crux या दक्षिणी क्रास) दक्षिणी आकाश में चमक रहे हैं।

5. दो चमकीले विशाखा तारे, तुला राशि (Libra) में उज्जवल चमक रहे हैं।

6. शुक्र ग्रह (Venus) पीछे रह गया है, अतः यह अदृश्य हो गया है।

7. मूला नक्षत्र धनुर राशि (Sagittarius) में केतु से प्रभावित है। धूमकेतु को यह सॉफ्टवेयर नहीं दिखाती।

सभी ने सह्द तथा मलय पर्वत श्रृंखला को पार किया। वे सभी कर्नाटक के कोपल जिले के पर्वत प्रस्रवण से आधुनिक हसन जिले के क्षेत्र से होते हुए रामनाथपुरम् पहुँचे। सेतु को पार कर श्रीराम की सेना सुवेल पर्वत पर पंहुच गई। वहां शिविर का निर्माण कर लंका को सभी ओर से घेर लिया। पर्वत की चोटी से श्रीराम और सुग्रीव ने लंका नगरी का सर्वेक्षण किया। यह 12 अक्तूबर, 5076 वर्ष ई. पू. की चाँदनी रात थी। जब पौष माह की समाप्ति और माघ मास का प्रारम्भ हो रहा था। रावण और श्रीराम की सेनाओं के बीच में घनघोर युद्ध कई दिनों तक चला। श्री राम ने कुम्भकरण का तथा लक्ष्मण ने इंद्रजीत का वध कर दिया।

उससे पहले इंद्रजीत ने ब्रह्मास्त्र का प्रहार कर लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया था। जाम्बवान से आज्ञा पाकर हनुमान हिमालय पर्वत पंहुचे। पर्वत की चोटी का ऊपरी हिस्सा उखाड कर चार औषधियां - मृतसंजीवनी, विशल्यकरणी, सवर्णकरणी और संधानी लंका ले आये और लक्ष्मण होश में आकर उठ खड़े हुए थे। नुवारा एलिया से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित हकागाला बाग में रतिगला की यात्रा से पता चला कि हिमालय की जड़ी-बूटियाँ श्रीलंका के अन्य वृक्षों और जड़ी-बूटियों से बिल्कुल अलग हैं जो वास्तव में वहाँ देखी जा सकती हैं। अंत में श्री राम ने अगस्त्य मुनि द्वारा दिए गए अमोघ वाण से रावण को भी मौत की नींद सुला दिया।

तत्पश्चात रावण का दाह संस्कार किया गया और विभीषण का लंका के राजा के रूप में राज्याभिषेक कर दिया गया। पुष्पक विमान पर आरूढ़ होकर श्री राम सीता और लक्ष्मण सहित तथा विभीषण, सुग्रीव, हनुमान और अंगद आदि को साथ लेकर अयोध्या की ओर चल दिए। अयोध्या में श्रीराम का भव्य स्वागत हुआ। इसके पश्चात् वसिष्ठ, वामदेव, जाबालि, कश्यप, कात्यायन, सुयज्ञ, गौतम और विजय - इन आठों मन्त्रियों और ऋषियों ने चारों समुद्रों से लाए स्वच्छ तथा सुगन्धित जल से सीतासहित श्रीराम का अभिषेक कराया। प्रजा के कल्याण को सर्वोत्तम प्राथमिकता देने की जिम्मेदारी लेते हुए, श्रीराम ने एक आदर्श राजा का उदाहरण प्रस्तुत किया, जो आज तक अद्वितीय बना हुआ है।

रामायण में वर्णित घटनाओं की खगोलीय तारीखों के साथ ऐतिहासिक तिथियाँ देते हुए एक चार्ट तैयार किया गया है, इसे नीचे दिया गया है –

ईमें.पू. खगोलीय वर्ष व तिथि और	ईपू में खगोलीय . वर्ष व तिथि और	ऐतिहासिक वर्ष ई.पू.,	घटना का विवरणवाल्मीकि रामायण / से संदर्भों के समकक्ष आकाशीय दृश्य

प्लैनेटेरियम का आकाशीय दृश्य	**स्टेलेरियम का आकाशीय दृश्य**	**तिथि वही रहती है**	
10 जनवरी , 5116 ई.पू., 27° उ., 82° पू.; 6: / बजे 45 अयोध्या	19 फरवरी , 5116 ई.पू., 27° उ., 82° पू.; 8: /बजे 30 अयोध्या	.पू.ई 5117	राजा दशरथ ने संतान प्राप्ति के लिए यज्ञ करने हेतु ऋष्यश्रृंग से अनुरोध करने के बारे में सोचा चैत्र में -पूर्ण चंद्रमा के साथ बसंत ऋतु की शुरूआत वा.रा.1/21/1
,जनवरी 15 5115 ई .पू ., 27° उ., 82° पू.; 6: / बजे 50 अयोध्या	24 फरवरी, 5115 ई .पू.27 ° .उ, 82° पू.; 8:30 बजे / अयोध्या	5116 ई .पू.	पुत्र कामें ष्टि यज्ञ का आरंभ श्रीराम के – ,जन्म से लगभग एक वर्ष पहले चैत्रशुक्ल प्रथमा .रा.वा -1/13/1
10 जनवरी, 5114 ईपू.. 27° उ., 82° पू.; 12:30 बजे / अयोध्या	19 फरवरी, 5114 ई.पू./ 27° उ ,82.पू °; 13.30 बजे / अयोध्या	5115 ई.पू.	पुनर्वसु नक्षत्र, कर्कलग्न में चैत्र शुक्ल नवमी को कौशल्या ने श्री राम को जन्म दिया। उस समय पाँच ग्रह अपनेअपने उच्च - स्थान में थे व चंद्रमा पुनर्वसु में थेकर्क ; राशि पूर्व में उदय हो रही थी- वा रा. 1/18/8-10
11 जनवरी, 5114 ई / .पू. 27.उ °, 82° पू.; 04:30 बजे / अयोध्या	20 फरवरी, 5114 ई.पू. / 27.उ °, 82° पू.; 6:बजे 00 / अयोध्या	5115 ई.पू.	कैकेयी ने पुष्य नक्षत्र, मीन लग्न में भरत को जन्म दिया - वा .रा.1/18/15
11 जनवरी, 5114 ई .पू./ 27° उ., 82° पू.; 11:30 बजे / अयोध्या	20 फरवरी, 5114 ई.पू., 14:00 बजे;27 ° उ .82.पू °; अयोध्या	5115 ई.पू.	सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को अश्लेषा नक्षत्र, कर्कलग्न में जन्म दिया .रा.वा - 1/18/15
04 जनवरी, 5089 ई .पू./ 27° उ., 82° पू.; 07:05 बजे / अयोध्या	12 फरवरी, 5089 ई.पू. / 8:00 बजे;27 ° उ., 82° पू. अयोध्या	5090 ई.पू.	श्री राम के वनवास से एक दिन पहले , राजा दशरथ के *रेवती नक्षत्र* को सूर्यमंगल , और राहु ने घेर लिया था। चंद्रमा "पुनर्वसु" में था - वा .रा.2/4/18 व 21

05 जनवरी, 5089 ई .पू./ 27° उ., 82° पू.; 15:20 बजे / अयोध्या	13 फ़रवरी, 5089 ई/.पू. 16.बजे 30; 27° उ., 82° पू /. अयोध्या	5090 ई.पू.	जिस समय श्रीराम वनवास के लिए प्रस्थान कर रहे थेउस वक्त , सूर्य और मंगल ग्रह रेवती नक्षत्र को घेरे हुए थे। चंद्रमा पुष्य नक्षत्र में तेजहीन था। आकाश में बृहस्पति , मंगल और बुध को देखा जा सकता था। - वा.रा . 2/15/3-4, 2/41/11-12
अक्टूबर 07, 5077 ई .पू./ 20° उ., 73° पू.; 14:15 नासिक (महाराष्ट्र)	15 नवंबर, 5077 ई /.पू.22:00 बजे; 20 ° उ., 73° पू नासिक /. (महाराष्ट्र)	5078 ई.पू.	खर दूषण के साथ युद्ध-से पहले पौष अमावस्या को लगा सूर्य ग्रहण; उस समय मंगल मध्य में था; शनि, सूर्य और चंद्रमा एक तरफ थे जबकि बुध, शुक्र और बृहस्पति दूसरी ओर थे .रा.वा -3/25/05
03 अप्रैल, 5076 ई .पू./16 ° उ., 76° पू.; 08:30 बजे / कोप्पल, कर्नाटक	13 मई, 5076 ई/ .पू. 9.बजे 27; 16° उ., 76° पू/. कोप्पलकर्नाटक ,	5077 ई.पू.	सुग्रीव की वाली के किले के सामने दहाड़ के समय वाली के वध से पहले किष्किंध में सूर्य ग्रहण देखा गया था –आषाढ़ की अमावस्या का दिन ;वा .रा.4/15/3
12 सितंबर, 5076 ई .पू./ 18:30 बजे;07 ° उ., 80° पू / . श्रीलंका / कोलम्बो	22 अक्टूबर, 5076 ई. पू./ 19.बजे 25; 7° उ., 80° पू / . श्री / कोलम्बो लंका	5077 ई.पू.	जब अशोक वाटिका में हनुमान ने रावण द्वारा सीता को डराते ,धमकाते देखा था- उस समयलंका के आकाश में चंद्रग्रहण देखा गया था। यह दो से अधिक घंटों तक दिखाई दिया - वा .रा.5/19/11-14
14 सितंबर, 5076 ई/ .पू. 6:00- 09:30 बजे; 07°उ., 80°पू ,कोलंबो /. श्रीलंका	24 अक्टूबर, 5076 ई /पू. 6:15- 09:45 बजे;07 °उ., 80°पू.; कोलंबो , श्रीलंका	5077 ई.पू.	लंका से सुनाभ पहाड़ी के लिए हनुमान की वापसी यात्रा; लगभग साढ़े तीन घंटे की अवधि के दौरान वर्णित खगोलीय स्थितियों का सत्यापन करने वाला व्योमचित्र - .रा.वा5/57/2-4
20 सितंबर, 5076 ई.पू., 06:05 बजे; 16°	30 अक्टूबर, 5076 ई.पू ., 7:बजे 30; 16°	5077 ई.पू.	माउंट प्रस्रवण से श्री राम की सेना का समुद्रतट की ओर प्रस्थान; उस समय चंद्रमा कन्या राशि में और शुक्र क्षितिज के

उ., 76° पू.; कोप्पल / कर्नाटक	उ., 76° पू. कोप्पल / कर्नाटक		नीचे चला गया; दक्षिणी आकाश में त्रिशंकु, उत्तरी आकाश में सप्तर्षि, तुला में विशाखा नक्षत्र कान्तिमान थे - 6/4/5,48-51

रामायण की कहानी, विज्ञान की जुबानी तथा रामायण रीटोल्ड विद साईंटिफ़िक एविडेन्स पुस्तकों पर आधारित इस लेख में श्री राम के जीवन काल में घटी महत्वपूर्ण घटनाओं की सटीक तिथियाँ महर्षि वाल्मीकि जी द्वारा दी गई ग्रहों नक्षत्रों की स्थितियों को **प्लैनेटेरियम** सॉफ्टवेर के माध्यम से सुनिश्चित की गई हैं। इन व्योमचित्रों को घटना की खगोलीय तिथि से 25920 वर्ष पहले या बाद में नहीं देखा जा सकता । पुस्तकों में वर्णित तथ्य श्रीराम के द्वारा मानवता के उद्धार के लिए किए गए अभूतपूर्व योगदान के बारे में युवा पीढ़ी को शिक्षित तथा प्रेरित करने में सक्षम होने चाहिए। सूर्यवंशी श्रीराम ने एक आदर्श राजाआदर्श पति ,आदर्श मित्र ,एक आदर्श भाई ,आदर्श पुत्र , और एक आदर्श समाजसुधारक के रूप में सर्वोच्च मानकों की स्थापना की। उन्हें वास्तविक नायक मानकर उनके द्वारा स्थापित आदर्शों का अनुसरण करने का प्रयत्न समाज में सुधार तथा संतुष्टि लाने स्थान य ,का कारक बन सकता है। श्रीराम ने संपूर्ण भारतवर्ष में जाति ा धर्म के आधार पर भेदभाव को मिटाकर एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व प्रयत्न किया। उन्होंने दक्षिण भारत के लोगों को उत्तर भारतीयों के साथ अटूट प्रेम बंधन में बाँध दिया।

सरोज बाला
भारतीय राजस्व सेवा से सेवानिवृत्त
वेदों पर वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान की पूर्व निदेशक
Email: sarojbala044@gmail.com

Website: sarojbala.com/RigvedatoRobotics.com
YouTube Channel: https://www.youtube.com/c/RigvedatoRobotics
Blog: https://sarojbala.blogspot.com
Documentary: https://www.youtube.com/watch?v=GASsp7lYjnY&t=122s